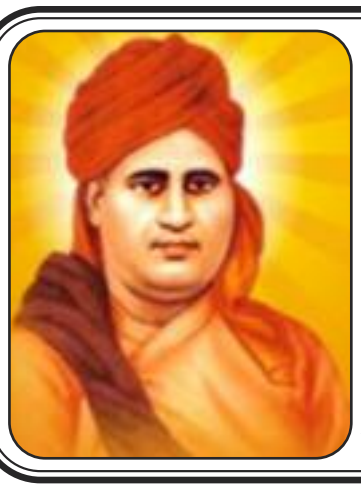

आर्योदया

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 309 ARYA SABHA MAURITIUS 8th June to 14th June *2014*

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ।।५।।

ऋग् वेद ७/४१/५

Om bhaga éva bhagavām astu devāsténa vayam bhagavantah syāma.
Tan twā bhaga sarva ijjohaviti sano bhaga pur étā bhavéha.

Rig Véda 7/41/5

O les hommes sages et éclairés!

Notre Dieu, unique et digne d'adoration, ne peut être nul autre que le Dieu tout puissant, éternel, incorporel, resplendissant et le maître suprême de l'univers. Il ne peut nullement être des choses inanimées de la nature telles que des idoles, des rochers, des montagnes, des étendus d'eau, des rivières, des régions de la terre des plantes et ni des êtres humains, des animaux ou des oiseaux liés par le cycle éternel de la naissance et de la mort.

Grâce à l'aide des sages, même les hommes ignorants deviennent des élites et des dévots de Dieu, trouvent le bonheur dans la vie et apportent leur soutien à d'autres gens démunis.

O Seigneur! Par ta grâce, que les hommes soient dotés de capacité physique, intellectuelle et morale et qu'ils aient une foi inébranlable en toi pour qu'ils puissent transmettre ta foi dans le cœur des hommes, les transformer en tes dévots et les délivrer des ténèbres de l'ignorance et du péché.

O Dieu! Tout ceci nous démontre la puissance de ta grâce et ta bénédiction.

N. Ghoorah

सन्ध्या-अग्निहोत्र की कक्षाएँ

दैनिक प्रार्थना-उपासना करना हर मनुष्य का परम धर्म है। इस कर्तव्य के पालन हेतु आर्य सभा के तत्वावधान में अनेक केन्द्रों में सन्ध्या और अग्निहोत्र के मन्त्रों को शुद्धता से सिखाने की व्यवस्था की जा रही है। इच्छुक जनों से निवेदन है कि वे अपनी सुविधानुसार किसी भी निम्नलिखित केन्द्र में जाकर सन्ध्या-अग्निहोत्र के मन्त्रों का उच्चारण सीखें । केन्द्रों में उपस्थित शिक्षकों से शीघ्र सम्पर्क स्थापित करें । यह शिक्षण मुफ़्त है। मन्त्रोच्चारण की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्रमाणपत्र प्रदान किये जायेंगे ।

A two-month Course in Sandhya-Hawan Mantras

The Arya Sabha Mauritius intends to start once more a two-month course meant for those, irrespective of age, who are interested in mastering the mantras related to Sandhya and Hawan.

Interested parties are kindly requested to join this course which will be held on Mondays, Tuesdays, Wednesdays, Thursdays, Fridays and Saturdays at 4 p.m. in the following places :

(a) Port Louis District
1. Pailles Arya Samaj

(b) Plaines Wilhems District
1. Neergheen Bhawan Arya Samaj
2. St Paul Arya Samaj

(c) Grand Port District
1. Morcellement New Grove Arya Samaj
2. Mahebourg Arya Samaj
3. Petit Bel Air Arya Samaj
4. Grand Port Arya Samaj
5. Bois des Amourettes Arya Samaj
6. Bambous Arya Samaj

(d) Savanne District
1. Surinam Arya Samaj
2. Grand Bois Arya Samaj

(e) Flacq District
1. Poste de Flacq Arya Samaj
2. Bonne Mere Arya Samaj

(f) Rivière du Rempart
1. Reunion Maurel Arya Samaj
2. Plaine des Roches Arya Samaj

(g) Moka District
1. Moka Arya Samaj
2. Upper Dagotiere Arya Samaj
3. Abhedanand Ashram, Quartier Militaire

(h) Pamplemouses District
1. Triolet Arya Samaj
2. Florida Arya Samaj

Our instructors will be on the spot where you will be able to fill the necessary forms prior to starting the course.

A certificate will be awarded to every participant.

Oudaye Narain Gangoo (Dr)

सम्पादकीय

विवाह-विच्छेद

हमारे मन, बुद्धि, अंतकरण, आचार-विचार आदि को शुद्ध और उन्नत करने के लिए किसी विशेष अवसर पर धार्मिक दृष्टि से एक विशिष्ट-कृत्य किया जाता है, जिसे हिन्दू परिवार 'संस्कार' कहते हैं। संस्कार १६ हैं। शरीर और आत्मा को उत्तम बनाने के लिए गर्भाधान से लेकर कई संस्कार किये जाते हैं। इन सभी संस्कारों में विवाह-संस्कार सर्वश्रेष्ठ माना जाता है ।

नवयुवक और नवयुवतियाँ जब ब्रह्मचर्य व्रत, विद्या, बल आदि प्राप्त करके सब प्रकार के शुभ गुण, कर्म और स्वभावों से परिपूर्ण हो जाते हैं, तब वे विवाह करने के योग्य हो जाते हैं। पंडित जी पंच के मध्य में विधिवत् विवाह संस्कार करते हैं। उस महत्वपूर्ण कृत्य से स्त्री और पुरुष में पत्नी और पति का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। उसी समय से वे गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर जाते हैं।

मानव जीवन में गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों में उत्तम माना जाता है। इसी आश्रम में प्रवेश करके दोनों दम्पति पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान करने में पूरा सहयोग दे पाते हैं। पति-पत्नी के तप-त्याग, शुभ कर्मों और सद्गुणों से वैवाहिक जीवन सफल हो पाता है। इसीलिए विवाह से पूर्व वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान और अनुभव प्राप्त करना अति आवश्यक है, अन्यथा अज्ञानवश दाम्पत्य जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। विविध प्रकार की कठिनाइयाँ जब उपस्थित होती हैं, तो उनका सामना करने में पति-पत्नी असमर्थ हो जाते हैं।

आज यह देखा जाता है कि अधिकतर नवयुवक और नवयुवतियाँ गृहस्थी का ज्ञान हासिल किए बिना शीघ्र विवाह कर लेते हैं। उनके कर्मों और आचरणों में कई प्रकार के दोष दिखाई देने लगते हैं। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी ज्ञान और अनुभव के बिना कई दम्पतियों में शीघ्र ही मतभेद होने लगता है, उनके विचारों में समानता दिखाई नहीं देती है। अहंकार के कारण कई प्रकार के दोष उत्पन्न होने लगते हैं, परिणाम स्वरूप दोनों का प्रेम घटने लगता है और शीघ्र ही तलाक लेने की नौबत आ जाती है।

विवाह-संस्कार तो एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। परम्परा से चला आया हुआ एक ऐसा विशिष्ट-कृत्य है, जो वर-वधू के भावी जीवन को शुद्ध और उन्नत बनाने के लिए निर्धारित है। इसीलिए पंडित जी पंच के मध्य में विधिवत् संस्कार करते हैं और निमन्त्रित गण विवाह के अन्त में वर-वधू की लम्बी आयु के लिए आशीर्वाद देते हैं।

आज यह देखा जाता है कि अधिकतर वर-वधू विवाह-संस्कार के महत्व को कम समझते हैं, उधर उनके परिवार विवाह की पूरी तैयारी, मंडपादि की सजावटों तथा मेहमानों के स्वागत-सत्कार में अधिक ध्यान देते हैं, विवाह संस्कार पर कम । ऐसी परिस्थिति में इतनी मेहनतों बाद वर-वधू का वैवाहिक जीवन उन्नतिशील नहीं हो पाता है। उनका दाम्पत्य जीवन अल्पकाल ही में एक नयी मोड़ ले लेता है और विवाह-विच्छेद हो जाता है।

तलाक लेने के बाद गृहस्थाश्रम में दरार पैदा हो जाती है। पति-पत्नी में वियोग होता है। हँसते-खेलते बच्चों की जिन्दगी बरबार हो जाती है। परिवार और समाज में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। पति-पत्नी अपने तनावपूर्ण जीवन में कई प्रकार के कुकर्म कर बैठते हैं। सुखी परिवारों में दुख के काले बादल छाने लगते हैं, जिनके दुष्पपरिणामों से बरबादी नज़र आती है ।

आजकल हमारे देश में तलाक लेने वालों की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही है। तलाक के पीछे अनेक परिवार बिखर रहे हैं। बच्चे दुख में बिलख रहे हैं। पति-पत्नी तलाक के मामले में हज़ारों रुपये खर्च कर रहे हैं। उन अबोध दम्पतियों के कारण हमारी पारिवारिक और सामाजिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। अतः आज हम समस्त परिवारों, समाज संस्थाओं एक गृहस्थी में विवाह-संस्कार के महत्व पर पूरा ध्यान देना चाहिए। तलाक लेने की स्थिति आ जाए तो पति-पत्नी को समझा कर उनमें एकता स्थापित करना हमारा कर्त्तव्य है, ताकि तलाक लेने वालों की संख्या घटे और संगठित परिवारों की वृद्धि हो। यह ध्यान रहे कि हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान दाम्पत्य जीवन के पूरे सहयोग, परिश्रम, त्याग और एकता-बल से होता है। इसी लिए विवाह-विच्छेद के विरोध में आंदोलन करना हर एक गृहस्वामी और समाज के अधिकारी का परम कर्त्तव्य है ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधि

दो पुस्तकों का लोकार्पण

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

गुरुवार दि० ४ जून २०१५ मॉरिशस के एक मील के पत्थर के रूप में रहेगा । हम इतिहास रच रहे हैं क्योंकि हमारे इतिहास में पहली बार भारत से आए हुए शर्तबन्ध मज़दूरों या छोटे व्यापारियों या स्वतन्त्र कामगरों की एक संतान को खासकर एक महिला को देश के उच्चतम ओहदे पर बैठने के लिए राष्ट्रीय सभा की एक विशेष बैठक बुलायी गयी ।

लगता है स्वामी दयानन्द का जो स्वप्न था महिलाओं को वह स्थान दिलाने के लिए जिस उच्च पद पर बैठाने के लिए पूरा होने जा रहा है ।

कल गुरुवार ४ तारीख़ को वाक्वा नगर पालिका के सभागार में दो पुस्तकों का उद्घाटण हुआ । एक अंग्रेज़ी में जिसका शीर्षक है – "Sexuality Education for the family" और दो हिन्दी में 'प्रभुप्रित की अमृत वर्षा' (Prabhu Preet ki Amrit Varsha) ।

उद्घाटण समारोह में तीन विशेष अतिथियों में दो महिलाएँ और एक पुरुष था। एक थीं लेडी जगनाथ वर्तमान प्रधान मंत्री की धर्म पत्नी और दूसरी वर्तमान सरकार की मंत्री जो लिंग की समेकता, बच्चों का विकास और परिवार के कल्याण जैसे मंत्रालय सम्भाल रही है और मंत्री जयेश्वर राजदयाल पूर्व पुलिस कोमिश्नर और वर्तमान पर्यावरण ..... मंत्री।

पूरा सभागार महिलाओं से भरा हुआ था। लग रहा था कि सचमुच उनकी संख्या हम परुषों से अधिक है । वे पूरी आबादी के ५२ % हैं ।

गत शनिवार को आर्य सभा में मातृदिवस का आयोजन आर्य सभा के तत्वावधान में महिला मण्डल ने किया था। उसमें भी तीन शीर्षस्य महिलाओं को आमन्त्रित किया गया था।

राष्ट्रीय सभा की अध्यक्षा श्रीमती शान्ति बाई हनुमान जी, शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन और मुख्य अतिथि के रूप में लेडी जगनाथ। यह भी ऐतिहासिक दिन था। पहली बार हमारी राष्ट्रीय सभा की अध्यक्ष के रूप में एक महिला को रखा गया है।

आर्य सभा मॉरिशस को गर्व है महिलाओं को ऐसे उच्चतम स्थान पर बैठी हुई देख कर।

रिव्येर जु राँपार आर्य ज़िला परिषद्

शनिवार २५ अप्रैल २०१५ ई० को सवा तीन बजे रिव्येर जु राँपार आर्य ज़िला परिषद् के सदस्यों का जुटाव आर्य मन्दिर गुडलेन्स में लगा।

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना से कार्य आरम्भ हुआ। परिषद् के पूर्व उपप्रधान श्री हरिदेव हरजान जी का स्वागत भाषण हुआ परिषद् के सदस्य श्री सुधीर कन्हाय जी ने उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद किया और यह संकेत किया कि जब तक आर्य सभा के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी वाहन द्वारा रास्ते पर आ रहे हैं तब तक हम अपनी परिषद् के विषय पर विचार-विमर्श करें। यह निर्णय हुआ कि रिव्येर जु राम्पार आर्य ज़िला परिषद् में जान फूँकनी चाहिए। तन-मन से परिषद् का स्तर ऊपर उठाने का प्रयास करना चाहिए। यदि सभी का सहयोग मिले तो काम एकदम आसान रहेगा ।

तत्पश्चात् आर्य सभा के नवनिर्वाचित सदस्य श्री उदय लोचन जी भवन में प्रवेश हुए । श्री लोचन जी को स्वागत के रूप में कुछ कहने के लिए निवेदन किया गया। उन्होंने बहुत सुन्दर ढंग से सभी लोगों का स्वागत किया और निवेदन किया कि हम सभी को मिल कर काम करना चाहिए।

लगभग सवा चार बजे आर्य सभा के प्रधान डा० गंगू जी कमेटी में पधारे। प्रधान जी ने खेद प्रकट किया कि आर्य सभा की कमेटी में व्यस्त होने के कारण देर हो गई। डा० जी का स्वागत किया गया। उन्होंने बताया कि आर्य सभा की ओर से श्री विवेकानन्द लोचन जी रिव्येर जी राँपार परिषद् के प्रधान चुने गये हैं और श्रीमती सती रामफल जी को मंत्री पद पर नियुक्त किया गया है। अब बाक़ी सदस्यों को नियुक्त करना चाहिए। परिषद् के लिए अठारह सदस्य नियुक्त किये गये।

अधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं- - मान्य प्रधान - श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी, प्रधान - श्री विवेकानन्द लोचन जी, उप प्रधान - श्री सुधीरचन्द्र कन्हाय जी, मन्त्री - श्रीमती सती रामफल जी, उपमन्त्री - श्री धनेश्वर चकोरी जी, उपमन्त्री - श्री बिसनुदेव बिसेसर जी, कोषाध्यक्ष - श्री हरिप्रसाद चमन जी, उपकोषाध्यक्ष - श्री ज्वाला कलयाचेटी जी, उप कोषाध्यक्ष - श्री बालचन्द देवदानी जी, पड़तालक - श्रीमती ग्यानेश्वरी मधु जी, पदेन सदस्य - पं० धर्मेन्द्र रिकाय जी, सदस्य – श्री सुनिलदत्त भोला जी, श्री सुरेश काधरसिंग जी, श्रीमती सुदेवी राजपालसिंग जी, श्रीमती प्रेमीधा चमन जी, श्रीमती जयश्री बिजवा जी, श्री विरजानन्द सिलोचन जी और श्री धनी धानाया जी ।

अंत में प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी ने सभी सदस्यों को धन्यवाद और बधाई देते हुए सभी से एक साथ मिलकर काम करने की प्रार्थना की । लगभग पाँच बजे शाम में शान्ति पाठ से समाज का कार्य विसर्जन हुआ ।

सुधीरचन्द्र कन्हाई
उप० प्रधान ज़िला समिति

वर्तमान समय में सभी सम्पर्क मन्त्रिणी सती रामफल जी के नाम से किया जाय।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

मातृ दिवस के सन्देश

पंडिता सत्यम चमन, एस.एस.के

पाई आर्य समाज में रविवार ३१ मई को मातृदिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर काफ़ी संख्या में पाई समाज के सदस्य-सदस्याओं ने अपनी उपस्थिति दी।

यज्ञ एवं यज्ञ-प्रार्थना के पश्चात् स्थानीय गायक-गायिकाओं के सुन्दर भजन हुए। फिर दो वक्ताओं ने मातृदिवस पर अपना-अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। आर्य सभा के प्रधान डॉक्टर उदयनारायण गंगू जी ने विस्तार पूर्वक माताओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। उनसे पूर्व मेरा भाषण एक मन्त्र के आधार पर हुआ, जो इस प्रकार था –

ओ३म् वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति ।
उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ ।।

ऋ० ५/४७/६

शब्दार्थ – **मातरः** - माताएँ, **अस्मै** - इस पुत्र के लिए, **धियः** - बुद्धियों, तथा **अपांसि** - कर्मों को, **वि + तन्वते** - विस्तृत करती हैं और, **पुत्राय** - सन्तान के लिए, **वस्त्रा** - वस्त्र, **वयन्ति** - बुनती है। **वध्वः** - वधूएँ, **मोदमानाः** - प्रसन्न होती हुई, **उपपक्षे** - सम्पर्क के निमित्त, **दिवः** - प्रथा ज्ञान के मार्ग से, **वृषणः** - वीर्य वान् समर्थ पुरुषों को, **अच्छ** - भली-भाँति, **यन्ति** - प्राप्त होती है; अथवा – **वध्वः** - वधूएँ, **उपप्रक्षे** - सम्बन्ध के निमित्त; **मोदमानाः** - आनन्द मनाती हुई; **वृषणः** - वीर्यवान् पुरुषों को; **दिवः** - चाहती हुई, **पथा** - धर्म मार्ग से, **अच्छ + यन्ति** - ठीक प्रकार प्राप्त होती है।

सन्तान जो कुछ है, वह प्रायः माता-पिता के आचार-विचार, आहार-व्यवहार तथा संस्कार का प्रतिबिम्ब है । माता-पिता के आचार-विचार का संस्कार बालक पर अवश्य पड़ता है और उनमें से भी माता का प्रभाव बहुत अधिक होता है। माता चाहे तो अपने बच्चे को शूरवीर, धीर-गम्भीर, धर्मात्मा-महात्मा, विद्वान्-पण्डित इत्यादि बना दे। अगर माता चाहे तो बालक को कायर, भीरू, चंचल, पापात्मा बना दे। माँ को जननी कहा गया है। जब एक माँ बच्चे को जन्म देती है तब प्रसव-पीड़ा को भूलकर केवल बच्चे का भला चाहती है। वेद माता कहती है – **वितन्वते धियो अस्मा अपांसि मातरः** - माताएँ अपनी सन्तान के लिए बुद्धियों तथा कर्मों का विस्तार करती है। यह सच है कि पिता के द्वारा बालक व्यवहार सीखता है, परन्तु माता की ज़िम्मेदारी ज़्यादा है। यदि सभी माताएँ अपने उत्तरदायित्व को समझ जायें तो संसार का संकट दूर हो सकता है। **वस्त्रा पुत्राय मारतो वयन्ति** - इस मंत्र द्वारा बताया गया संतान की सुविधा के लिए माताएँ स्वयं वस्त्र बुनती हैं। इसका अभिप्राय यह है कि माता जो है अपनी संतान की देख-रेख करे। उसका पहनावा, चाल-चलन इत्यादि बड़ी ज़िम्मेदारी है माताओं पर। माँ को निर्माता कहा गया। जैसे कुम्हार मिट्टी के बरतन बनाते समय थपकियाँ देकर उसको आकार देता है, वैसे ही माँ अपनी संतान को सोने जैसे परिष्कृत करके सुन्दर आकार देती है, जिससे राष्ट्र में उसकी सुगन्ध फैले। कौशल्या ने राम को बनाया। आज विश्व मर्यादा पुरुषोत्तम राम का नाम ले रहा है, यशोदाबेन ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को बनाया। प्राचीनकाल में हमारी कुछ माताएँ शिक्षित नहीं थीं, फिर भी अपने अनुभव के द्वारा बहुत अच्छे कार्य करती थीं। उपनिषद् का कथन है – **मातृदेवो भव।** माँ देवी है, हम पर अपना सर्वस्व निछावर करने वाली, फिर लघुतर में हुआ माता। लघुतर से लघुतम हुई माँ। माँ शब्द जब उच्चारण करते हैं तो लगता है कोई नन्हा शिशु अपनी तुतली और अस्फुट वाणी में सारी श्रद्धा को। कृतज्ञता को भरकर पुकारता है। यह पुकार अमोघ है, करुणामयी है, वात्सल्यमयी है।

माँ की महिमा अपार है। कुसुम की कोमलता, व्रज की कठोरता, सागर की गम्भीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, गंगा की पवित्रता, चाँदनी की शीतलता एक साथ, एक जगह मिल जाये तो उसका नाम होता - माँ । माँ से छोटा कोई शब्द नहीं है, पर इतना महिमामय, अर्थवान्, ध्वनिगर्भित शब्द भी कोई नहीं है ।

माँ शब्द के उच्चारण से ही बच्चे अपने आपको सुरक्षित मेहसूस करते हैं। **स्वर्गादपि गरीयसी** – माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है ।

महापुरुष माताओं से ही उत्पन्न हुए हैं। छत्रपति शिवाजी की माँ जीजाबाई थीं, भगतसिंह की विद्यादेवी, स्वामी दयानन्द की यशोदा बेन और राम की कौशल्या। संसार के समस्त विद्रोह, क्रांति की जन्मदायिनी माँ ही होती है।

कहा गया – **'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।'**
अर्थात् - पुत्र चाहे कुपुत्र ही क्यों न हो । माँ कभी कुमाता नहीं बनती ।
फिर कहा –
'उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणं शतं पिता सहस्त्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्चयते'
अर्थात् - एक आचार्य गौरवमय दस उपाध्यायों से बढ़कर है।

एक पिता सौ आचार्यों से उत्तम है तथा एक माता एक हज़ार पिताओं से श्रेष्ठ है।
एक और वचन है – **'न मातुः पर दैवतम्'**
माँ से बढ़कर परम देवता कोई नहीं है।

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा – पृथिवी से भारी और गरिमामयी क्या है ? उनको उत्तर दिया गया – माता ।

विज्ञान ने विश्व को एक छोटे परिवार में बदल दिया। इस परिवार की निर्माता माताएँ हैं।

विश्व की सभी माताओं को मेरा नमन।

OM
SATYARTH PRAKASH JAYANTI
MOKA ARYA JILA PARISHAD

S/N A.S/A.M.S DATE TIME *Pandits & Panditas*

1. Petit Verger 2 June 1.30 p.m Pta. A. Maheeputh
2. N. Decouverte AMS 3, 10, 17, 24 June 2.00 p.m Pta T. Bumma
3. Abhedanand Ashram, Q. Militaire 4 June 4.00 p.m Shri Balchand Tanakoor ji & Dr O.N.Gangoo ji
4. L'Agrement AMS 5 & 19 June 1.30 p.m Pta. V. Hemraz
5. N. Decouverte A.S 7,14, 21, 28 June 7.30 a.m President & Members of N. Decouverte A.S
6. Bois Cheri-Moka AS 7 & 21 June 7.30 a.m
7. Maleinga AMS 12 & 26 June 1.00 p.m Pta. T. Buccha
8. Bois Cheri Moka AMS 12 June 2.00 p.m Pta. V. Hemraz
9. Dubreuil AS & AMS 14 June 9.00 a.m Pt. S. Fakoo
10. L'Assurance AS 27 June 3.00 p.m Pt. S. Bhoojhawon
11. Camp Thorel AMS & AS 12 June 6.30 p.m Dr. O.N.Gangoo & Panditas
12. Upper Dagotiere AS 14 June 8.30 a.m Pt. S. Bhujhawon

कोटिशः धन्यवाद

आर्य सभा ने ३० अप्रैल को एक प्रेस-सम्मेलन के दौरान अपने शाखा समाजों के सदस्यों एवं आम जनता से अपील की थी कि वे नेपाल-पीड़ितों की सहायता के लिए दिल खोलकर आर्थिक दान दें । बहुतों ने सभा के पंडित-पंडिताओं के द्वारा अपना दान भेजा है। आर्य सभा ने प्रधानमन्त्री जी को एकत्र किये गये छः लाख रुपये सौंप दिये हैं । दान-दाताओं और दान इकट्ठा करने वाले सभी को सभा धन्यवाद करती है ।

We are grateful indeed

Dr Oudaye Narain Gangoo, O.S.K, Arya Ratna, President Arya Sabha Mauritius

At a press conference which the Arya Sabha Mauritius held on 30th April 2015, an urgent appeal was made to all Arya Samaj branches and the public in general to donate generously to relieve the suffering of the people of Nepal through the Prime Minister's Relief Fund.

It gives us great satisfaction to note that Mauritians from all walks of life responded to this request. This noble gesture on their part enabled us to collect the sum of Rs 600,000/- (six hundred thousand rupees) which we have already contributed to the Prime Minister's Relief Fund.

We express our appreciation to the Honourable Prime Minister, for setting up the Fund and we are grateful to our members and the Mauritian Community as a whole who, through their generosity, have made it possible for us to contribute to the Fund.

NEPAL SOLIDARITY FUND

cont. from last issue

S/N	Name	Amount Received Rs
	Balance b/f	*263,805.00*
1.	SEN School - Union Vale	500
2.	Mr Harrydev Ramdhony - Managing Committee	1000
3.	Mr. Amar Ramdhony	500
4.	Ilot AS & AMS No 20	1500
5.	Mrs Gobin	200
6.	Mr. Bussawon	100
7.	Mrs. Shanti Mungra	100
8.	Highlands AMS	1100
9.	Mr. Garbou	100
10.	Mrs. Srimati Gobin	100
11.	Mrs. Anjani Proag	100
12.	Mrs. Kamla Bundhoo	100
13.	Mrs. Rajwanti Peerthum	100
14.	Mrs Suttee Ramphul - Managing Committee	1000
15.	Florida Pharmacy c/o Mr Bholanath Jeewuth	5000
16.	Forest Side Arya Samaj	500
17.	Mrs Lutchmeenaraidoo c/o Port Louis AS	1000
18.	Lackshana & Tanushree Pydegadu	1000
19.	Dr. Roodrasen Neeewoor - Managing Committee	2000
20.	Mr. Lilah Khemlall - Floreal	1000
21.	Mr. Vikash Teeluckdharry	5000
22.	Mrs. Kavita Mungroo	300
23.	L'Esperance Trebuchet AS & AMS	2985
24.	Beejaylutchmee Jagessar	500
25.	Parsad Mungroo	1000
26.	Dimal Bachoo	500
27.	Marathi Vedic Sabha	5000
28.	Hinchoo Akhil	100
29.	Hinchoo Antee	100
30.	Hinchoo Aryawatee	100
31.	Arya Samaj No 126,160,146	5000
32.	Members of public c/o Pt. S.Fakoo	450
33.	Mrs. N.Moothoor	300
34.	Mr. & Mrs. Bissessur S.	400
35.	Flacq Arya Zila Parishad c/o Pta. Simla Dabeeeah	3250
36.	Soge International Co Ltd c/o Mr D.Somna	10,000
37.	Triolet, Trois Boutiques Arya Samaj No 60 (Members)	5500
38.	Cheemungtoo Indrawtee,Jungleea Deojeet	100
39.	Breejanund Seelochun	100
40.	Cheemungtoo Indrawatee, Junglee Pinrawtee	100
41.	Boodnah	100
42.	Padoran Raj	100
43.	Ragoonundh Prakash	200
44.	Chengee Sharma, Bhima Raj	100
45.	Junglee Nundrawtee, Nunkoo Ranjit	120
46.	Jungleea Suneeta	100
47.	Saloni Pockraz	200
48.	Sooveedha Nundlall,Sunita Budhna, Anand Fokeerah	150
49.	Ramkissoon Dharmen	100
50.	Ramkissoon Numratan	100
51.	Dr. P.K Ramkhelawon	200
52.	Obhyman,Suresh Bissessur	125
53.	Jayshnee Bissessur	100
54.	Pravita Bissessur	100
55.	Creve Coeur AS	500
56.	Creve Coeur AMS	500
57.	Deoduth Khirodhur	100
58.	Malika Ramruttun	100
59.	Mala Ghoorah	100
60.	Anita Ramruttun	100
61.	Mawtee Mungur	100
62.	Indira Chintaram	100
63.	Indrawtee Dhunnoo,Taydithwarsy Sandoram	225
64.	Radha Patchkowree	200
65.	Sumawtee Caussy	100
66.	Jaywantee Goorbun	100
67.	Ooma Seelochun	100
68.	Oomawtee Ramsurrun	100
69.	Nirala Kitaruth	200
70.	Hemwantee Sembhoo	100
71.	Shakuntala Suneeram	200
72.	Dewkee Kisnowtee	100
73.	Premawtee Gopee	200
74.	Premila Dinaram	100
75.	Sonattee Runjeet	200
76.	Shantee Bhagwat	1000
77.	Veena Goorbin	100
78.	Soutitah Dhunput	200
79.	Chandradut Sembhoo	200
80.	Dhanwantee Pockraz	500
81.	Mrs Busawon Ehshana	1000
82.	Pt. Ramkalawon Shivsungkur & family	1000
83.	Vishnuduth Beezadhur	500
84.	Kushi Dahoo	200
85.	Swastee Ramparsad	100
86.	Deenoo	100
87.	Banya	100
88.	Kresna Devi Soburrun	100
89.	O.Jagoo	300
90.	Satish Ramkissoon	100
91.	Jeelall Muhool	200
92.	Nundan Choollun	100
93.	Jugdish Choollun	100
94.	Dharamraj Jaddoo	100
95.	Sanjiv Sohur	200
96.	Rosha Oolash	100
97.	Bhogun A., Meenowa A., Chinnapen, Ourvi	100
98.	Mrs Bhola	200
99.	Pandit Sohur	100
100.	N.D Ramkhalawon	100
101.	Manee Horil	100
102.	Vasantee Jogeswar	100
103.	Rajwantee Seegoolam	100
104.	Satyabhama Purgas	100
105.	Ahelia Badaloo	100
106.	Vidyadharee Badaloo	100
107.	P. Badaloo, Y. Badaloo	100
108.	Rajamah D. Badaloo, Kamla Ramlagun,Ouma Sohunsing	130
109.	Kavita Meetoo, Sila Busgeet	125
110.	D.Vidianand	200
111.	Vijay Baichoo	100
112.	Vedwatee Bissessur, Tacooree, Bhimsen Ramrekha, D.Ramcharilar	145
113.	T.Seegoolam,Santa Dinga,Soonrawtee Ramkhelawon, Sakashsing Bawram	115
114.	Diya Bessoon	100
115.	Indira Robee	100
116.	Luthmee Marooday	100
117.	Vidousee Soobeerun, Sivraj Lallith	100
118.	Artee Seegoolam, Vidusee Seegoolam	100
119.	Chandrajyoti Bundhun,Renuka Busgeet, Bindu Bundhun	100
120.	Devina Hallooman, Babita Tamania, Gassen Pillay	150
121.	Premi Pillay, Amrita Jeetoo, Danwantee Jootun	105
122.	Nandon Rai Joorawon,L.Appadoo, Deepa Lalloo,Ooma Sohunsing	150
123.	Poornima Jagarnath	100
124.	Bulloram Vishal	100
125.	Shosila Putty,Ranjeeta Putty, Dewanand Somaah	100
126.	Giantee Khelawah, Louis Stelio Bhawanee	160
127.	Vandanah Chiffone, Indranee Duban	125
128.	Jean Bruneau Hector	100
129.	Krissnawtee Lutchoomun,Leeana Ellias,Razpatu Lutchooman	100
130.	Dukka Ramadu	100
131.	Mantee Ellias,Sabeetree Goolchun	150
132.	Nirmalah Groochurn	200
133.	Bhanoomatee Lutchoomun,Anjoo Lutchoomun,Sarojinee Pobheegadoo Soodevie Nankoo	105
134.	Vimal Gooljar	100
135.	Sita Gooljar,Teena Gooljar	125
136.	Mrs Ashwantee Deolee	100
137.	Saint Aubin Arya Samaj	400
138.	Bhartee Lallsha,Vishwaraj Lallsha, Prabhawtee Woograh	125
139.	I. Beesasur, R. Naiko, Y.D. Dhunput & C. Dhunputh	115
140.	R. Dhunputh,B. Muttra,V. Muttra,A. Mania	175
141.	Dinesh Muttra, Dhaneswar Muttra	100
142.	Amrita Seebarun, Mahadeo Devason	100
143.	Louis Jack Komal,Chedy Ishwarduth, Jaspalsingh Cheely	100
144.	G. Purbuth,D. Muttra,I. P. Soomaroo	125
145.	V. Soomaroo, Pt. J. P. Muttra	150
146.	B. Jaguth, A. Muttra, D.K. Muttra	150
147.	Shangeeta Babooram	100
148.	Dhanraj Babooram	100
149.	Reshmee Veeranna	100
150.	Raginee Bowhoo	100
151.	Rajkumari Teehay, Sandya Soodhoo, Menkah Ramkelawon	250
152.	P. Baworee, Divambah Valayden	125
153.	Amrita Seegolam	100
154.	H.Deviani	100
155.	Premila Babooram	260
156.	Rishi Babooram	200
157.	Renuka Babooram	100
158.	N. Babooram, N. Tayloogadu	125
159.	Bibi Shirin Ramjan,Moloo Quincaillerie	150
160.	Said Jauhuraully	100
161.	R. Boodhun	100
162.	P. Sahodur,R. Succaram, S. Beeharry	260
163.	Toolsydass Guness	500
164.	Camp Siadi Arya Samaj No. 123	500
165.	Kamal Ramgoolam	100
166.	Devraj Harroo	100
167.	Camp Siadi Arya Mahila Samaj No 414	500
168.	Gansiam Hemraz & family	1000
169.	Gawtam Bonomally	1000
170.	Mewa Bonomally	500
171.	Seesamba Bhekar	200
172.	Devika Jeewon	100
173.	Anand Jeewon	100
174.	Rajan Jeewon	100
175.	Iswar Ramcharan	300
176.	Shyam Ramkhelawon	100
177.	Kreshna Ramessur	100
178.	K. Luchumun, A. Moteeram	100
179.	Pt. Vamanand Ramchurn	150
180.	Sirvesh Muttea, Vidhor Sonoo	115
181.	Kreshna Gangah	100
182.	Anand Ramphul	100
183.	Mala Divali	100
184.	Dharam Prayag	100
185.	Appadoo Sarathi, Seela Hurree	250
186.	Seelagan Jugan	100
187.	Rajan Ramnawaj	100
188.	Renooka Ramnawaj, Ramsagar Seeparsad	150
189.	Abhimanyu Oodaye	100
190.	P. Kasory, D. Seeparsad,A. Seeparsad	130
191.	V. Jogoosing, V. Parboodoyal	100
192.	Nitish Luchumun	100
193.	Soobash Soomaroo	100
194.	Ravinan Puttur	200
195.	Yash Bhekur	200
196.	Manisha Bhekur	100
197.	Kamlabye Bhekur, Rajesh Khedu	150
198.	Uttam Nundowah	1000
199.	Sardhanand Nundoah	100
200.	V. Suneechar, R. Soomaroo, S. Nankessor	100
201.	Sunil Tannah	100
202.	Navin Tannah	100
203.	Karishma Tannah,Sunita Ramnawaj	100
204.	Indira Luchumun	100
205.	Narvada Ramnawaj, Preeti Kiran Hemraz	255
206.	Rajen Ramjee	200
207.	Mr & Mrs Hurrylall Peeay	200
208.	Luxmee Harpal	200
209.	Arvind Dumur	200
210.	Chamouny Arya Samaj	200
211.	Salick Tondary	100
212.	Ansuya Bheekha	100
213.	Kisnowtee Bheekha	200
214.	Shrimati Bheekha, Premawtee Bheekha	100
215.	Dilip Lofur, Rammen Monisawmy, Manti	100
216.	C.Ruben	100
217.	Narain Navishka	100
218.	Rudra Balkissoon	100
219.	Premduth Bhim & family, Rajiv Bulloram	150
220.	Sunil Tondarry	100
221.	Shyam Tondarry	100
222.	Anand Lofur	100
223.	Rico, Rajesh, Deeksha Lalljee	175
224.	Shekar Gaoneadry	100
225.	Kavita Gaoneadry	100
226.	Sawpna Gaoneadry	100
227.	Shusham Gaoneadry	100
228.	Samidha Gaoneadry	100
229.	May Riacca	100
230.	Beekha Santy	100
231.	Vidianand Gaoneadry	100
232.	Raj Mootoo, Devin Mootoo	100
233.	Samy Munsamy, Ramgopal Sunil	150
234.	Neha Ramgopal	100
	TOTAL	**Rs 354,980.00**

..... *to be continued*

How do we know something is true or untrue?

Prof. Soodursun Jugessur, CSK, GOSK , Arya Bhushan -- Representative of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi

In a world with so many conflicting views, philosophies of life, and people claiming to be messengers of God, we often start wondering what is true and what is untrue. To add to all this, these days the internet is allowing people to forward all sorts of half-truths, and asking us to forward the same to friends and acquaintances. It is good to have a questioning mind and not accept things without ascertaining ourselves of the probable veracity of statements. Very often certain statements have validity only in the context of space and time, i,e the place where they were uttered and the time then.

It is in this context that we analyze our scriptures and authoritative books. Blind faith in traditions and statements by 'erudite' path-breakers is not recommendable. The test of time and place is essential. We have been gifted with the ability to reason, an ability that gets enhanced with experience, learning and intuition, and a pronounced sense of virtue and justice. Generally only those who are not victims of bad habits and not attracted to gold and illicit sex can have a chance of having a glimpse of truth.

As we are soon celebrating the month of **Satyarth Prakash**, Swami Dayanand's magnum opus, it is timely to highlight what he viewed as the tests of truth. In his book, in the chapter on education, he gives in elaborate version, the following five ways to establish truth and discard untruth:-

- 1. Compatibility with material and spiritual science as the Ritam in the Vedas. Scientific proofs are valid proofs if they withstand the tests of time and place.
- 2. Agreement with the Laws of Nature. These are eternal laws that do not change with time and place, and are valid in any part of the universe. Many such laws are still being discovered in science with new discoveries like the existence of dark matter as a major component of the universe.
- 3. Conformity with **one or all** of the eight proofs, namely: Perception, Intuition, Inference, Comparison, Testimony of scriptures excluding blind traditional practices, Presumption, Probability and Negation. Examples of these are elaborated in the chapter on education in Satyarth Prakash. If something is in conformity with one proof, it is still invalid if it does not conform to the overall five ways being mentioned.
- 4. Conformity with the behavior of Aptas or Great people who follow Dharma.

The Rishis, or those who are 'Drishtas' able to know the past and the future, have shown the path for us.

- 5. The purity of one's own self. This is particularly important for if our thoughts and intentions are not pure, we cannot embrace truth and our actions will be tinted. This is a fundamental requisite as thoughts, intentions and actions determine our destiny, and not the pages of astrological charts, or 'Janam Patris'.

At the very least, our conscience, unless we have smothered it through repeated evil deeds, is the best guide to our behavior and actions. Through daily introspection and meditation, we can reach a higher and higher level of spiritual development that makes our judgment sound. That is why we are encouraged to concentrate on the Gayatri Mantra, and to pray for the illumination of our intellect.

Here, as stated in the tenth principle of the Arya Samaj, we should be ever prepared to forgo our ego, our own petty benefits for the greater benefits of others. The ego is ever a stumbling block in the path of truth and justice.

As we are celebrating the month of Satyarth Prakash, let us all reflect, ruminate and assimilate the ideas contained in the five tests prescribed above, and try to apply them in our decisions on what is true and what is false.

COMMUNIQUE

All Mauritians in general, members of Arya Samaj and Mahila Samaj Branches, Parishads, Purohits and Purohitas will be pleased to have the address of a New Weekly from India. It is a 12 Page Weekly for only Rs240/- for all year.

'Arya Vrat Kesri' full colour of 12 pages. It will reach your home every week.

Address : Dr Ashok Kumar Arya
Editor Arya Vrat Kesri
Mouradabad Gate
Amroha
U.P.
India - 244221

Mob. : (1) 020-91 – 8273236003
(2) 020-91-- 9412139333

You can write or phone to send your Name and Address Weekly News at your home.

You can post your annual subscription.

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

Monthly Activities of Purohit

Name : Pt. Kaviraj Kheddoo

Satyarth Prakash Maas

Date	Time	Place
02.06	16.00	Mr Jawaheer
02.06	18.00	Camp Fouquereaux A.S.
03.06	18.00	Sangram Bhawan 1st floor
05.06	19.30	Hermitage A.S
07.06	08.30	Sangram Arya Samaj
07.06	16.00	P. Ghurburrun
09.06	18.00	Camp Fouquereaux A.S.
10.06	13.30	Solferino A.M.S
10.06	19.00	Sangram Bhawan
12.06	14.00	C.S. Ramlukhun
12.06	19.30	Hermitage A.S.
14.06	08.00	Clairfond A.S.
14.06	16.00	Akash Ghurburrun
17.06	13.30	Solferino A.M.S
17.06	19.00	S. Bhawan 1st floor
19.06	19.30	Hermitage A.S.
19.06	17.00	I. Sooklall
21.06	07.45	Solferino A.S.
21.06	16.00	Savita Ghurburrun
24.06	13.30	Solferino A.M.S.
24.06	19.00	Sangram Bhawan
25.06	19.30	Hermitage A.S.
26.06	19.00	Dhuny Lane A.S.
27.06	16.00	Sangram Bhawan
28.06	08.00	Reunion A.S.
28.06	16.00	A. Ghurburrun

OM

Satyarthprakash Maas - June

The President and members of the Bassin Road Arya Samaj cordially invite you, your family and friends to attend a 9 - session forum on Satyarthprakash, as per schedule below. All the sessions will be conducted by Pandit Yaswantlall Chooromonay, MSK, Arya Bhushan.

Venue : Vedic Vidya Bhawan, J. Nehru Road, Quatre Bornes.
Time : 5.00 p.m. to 6.15 p.m.
Dates & Topics : Mon. June 1 --

Who is God? His names, attributes and activities.

Fri. June 5 -- Creation - When? how? why?
Mon. June 8 -- Human Evolution - from Womb to teenage.

Fri. June 12 -- Married life -- 5 Primary daily duties (5 Mahayajs)

Mon. June 15 -- 4 main attributes of Man (Varna).

Fri. June 19 -- Government and Political Science

Mon. June 22 -- Vedas and Devtas

Thurs. June 25 -- Implication of Food - eatables and non-eatables.

Mon. June 29 - Bondage and Emancipation

L. Heeroo *President* **B. Ramkissoon** *Secretary* **D.Y. Belut** *Treasurer*

"Swami Dayanand's views on early education"

Presently child delinquency and indiscipline of students in schools, buses, public places and even in their immediate environment has become an acute problem. Government, NGO's and even parents are anxious about the deteriorating situation and everyone at one's level is pondering what need to be done?

I am herewith presenting an article based on "Swami Dayanand's views on early education" written by Prof. Vasundra Rehani from Sanskrit Dept, Punjab University with hope that this will help people find the right solution.

In Swami Dayanand's scheme of education, the education of the infants at home, before the actual school age of eight, occupies an important place. He begins the second chapter, EDUCATION ON CHILDREN, in SATYARTH PRAKASH with the statement from shatpath brahamana and goes on to say that a man is learned if he has three good teachers namely, the mother ,the father and the teacher. Blessed is the family, fortunate is the child whose mother and father are righteous and learned. He has attached great importance to the home-the parents-as an Agency of education. He firmly believed that "children do not receive so much good and benefit of education from any other person as they do from the mother."

When Swamiji regarded a mother as a potentially a great teacher of her child he foreshadowed what many child psychologists and researchers in the field of child development discovered later. In this way, for the first five formative years he entrusts the education of the child to the mother, she alone being the most capable person to inculcate and nurture the seeds of culture and tradition in that developing child. And for that matter Swami Dayanand wants the mothers themselves to be educated in the first place. His scheme of infant instruction and training by the mother has the following characteristic features.

When the child learns to speak, the mother should begin the first phase of planned efforts to mould its tongue to ensure clear and distinct articulation. The child should be trained to pronounce every letter using its proper organ correctly and in proper stress of voice.

Child should be taught sweet speech and how to converse with the elders in the family and outside and with the other children of his age or below his age in the right manner. The stress should be on courteous, clear and graceful speech. The child is also to be taught how to behave himself towards persons in the family and outside the home and he advises the parents to spare no pains to make children master of their senses, lovers of knowledge, and fond of good company. They should not unnecessarily be allowed to indulge in playing, weeping, joking, quarreling, bemoaning, fondling with an object, envy, enimity and all other evil habits. They should not touch and irritate the genetive organ. The children should be trained to acquire the habit of veracity, bravery, patience, amiability and similar virtues. (SATYARTH PRAKASH, chapter 2)

These ideas about the early education of children were expressed more than a century ago. Since then the educational thoughts and practices in the domain of early childhood education have made much advanced strides. Swami ji also implied that the mother, father and teacher should teach right type of personal and social habits to their children and pupils. Children should be taught to speak the truth and faithfully do the righteous work which their elders want them to do. They should be told to abstain from the use of non vegetarian food ,wine and other intoxicants. They should be trained to have control over their speech and mind and be respectful to their parents, teachers and elders and guests. The most important thing Swami Dayanand suggests the parent to follow is -not to fondle or pamper their offspring. While quoting Mahabhashya (8.18) he says -- "Those fathers and mothers and teachers who are severe in educating their children and pupils, are as it were, giving them nectar to drink with their own hands, but those who fondly love them give them poison to eat, so to speak and thus spoil and ruin them "Thus parents should teach discipline to their children.

In short Swamiji rightly made home as the first agency of educating the child. Therefore in the early childhood education scheme of Swami Dayanand the primary stress has been laid on the immediate environs of the upcoming child, as according to the Indian tradition it is the age wherein one can mould the future pattern of not only the development of a child but also of the nation as a whole, the former becoming the mainstay of latter later on.

Dr. Vasundra Rehani is the Retired Professor from Sanskrit Dept. Panjab University. 9872661946

VEDIC THOUGHTS 10TH JULY 2013, CHANDIGARH

Sender -- Shri Harrydev Ramdhony, Arya Ratna - Secretary Arya Sabha